# लोगों का क्या!

**जीवन हमारा है, हमारे लिए है, उसमें रहना भी हमको, जीना भी हमको है, सारी खुशियाँ हमारी ही हैं, लेकिन किन्तु परंतु कहके हम दूसरों की शर्तों पर जीवन जीते हैं। शायद इसीलिए तो दु:खी नहीं हैं ना! हमेशा अच्छा करो तो मुश्किल, ना करो तो और मुश्किल! कर रहे हैं तो कहेंगे आप लगे ही रहते हैं थोड़ा आराम कर लो। आराम करने लगे तो कहेंगे आराम हराम है। फिर क्या किया जाए! सभी हमें अपने जीवन के अनुभवों तथा शर्तों पर जीवन जीने के लिए विवश करते हैं या हम वश होते हैं?**

हम आपको अपने अनुभव के आधार से बताना चाहेंगे। कोई भी सिद्धान्त एक दिन में नहीं बनता, उसे बनाने वाले ने दिन-रात मेहनत की होती है, तब कहीं जाकर एक सिद्धान्त का निर्माण होता है। किसी भी खोज में, चाहे विज्ञान, चाहे समाज शास्त्र या दर्शन शास्त्र, सभी के रचनाकारों ने क्या कुछ नहीं किया होगा! इनकी थीम बनाना, फिर ठीक नहीं लगा, तो फिर बनाना, तब जाके कहीं एक छोटा सा टॉपिक तैयार होता है। लेकिन उस पर फोकस होने के लिए सबसे पहले उन्होंने क्या किया होगा? हमारे हिसाब से एक चीज़ की होगी, वह है, दुनियादारी छोड़ी होगी। उनके पास इन बातों के लिए समय होगा कि दुनिया में क्या हो रहा है? लोग क्या कह रहे हैं, या फिर हमारे घर वाले क्या सोच रहे हैं, आदि आदि।

ये सारी चीज़ें किसी भी क्षेत्र में लागू होती हैं। चाहे वो विज्ञान हो या अध्यात्म, सभी में ये चीज़ें एक समान कार्य करती हैं। कोई भी इतिहास लिखने के लिए सिरफिरा होना पड़ता है। यहाँ सिरफिरा का भाव है कि उस विषय के प्रति दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना पड़ता है; खाने, पीने, सोने तक की भी फुर्सत नहीं। ऐसी स्थिति हो, तब जाकर कुछ होगा। हम चाहते हैं हमारा सब ठीक भी हो जाये, और हमें कुछ करना भी ना पड़े। ठीक तो पक्का हो जायेगा, लेकिन उसके लिए, करना तो पड़ेगा! लेकिन जो हमारी मजबूरियाँ हैं ना, वो हमें आगे बढ़ने नहीं दे रही हैं। भगवान ने जब शर्त रखी है कि यदि हम पाँच चीज़ें छोड़ दें तभी जाकर हमें सब कुछ मिलेगा जो हमें चाहिए, और यही हमारी, आपकी दुनियादारी है। भगवान के घर में भी रहते और बाहर भी रहते। यहाँ समर्पित भी होना है, बीच में रिश्ते भी निभाने हैं। भाई! ये शर्त हमारे लिए नहीं है! आप यहाँ रहते हैं और बाहर भी जाते हैं, रिश्ते भी निभाते हैं, तो अपना टाइम वेस्ट कर रहे हैं। यदि ऐसा कर रहे हैं तो। तभी तो हमसे चमत्कार नहीं हो रहे। हम भी लोगों की तरह सब कुछ प्रयोग करते, उन्हीं की तरह रहते, उन्हीं की तरह साधनों, मोबाइल फोन, ईयर फोन, टैब का प्रयोग करते, सब कुछ वैसा ही है। कुछ आपने या हमने नहीं बदला, और सभी यही चाहते हैं कि आप उन्हीं की तरह रहो। लेकिन कुछ अलग करने के लिए अलग तरीके से रहना भी पड़ेगा और उसकी कन्सीसटेन्सी या तारतम्यता भी बनानी पड़ेगी।

दुनिया का उदाहरण लो, किसी को किसी के प्रति आकर्षण हो, तो वो सबकुछ भूलकर अर्थात् दुनियादारी छोड़ उसी के नियम, शर्तों पर जीवन आखिर तक जीता है। उस समय कोई लाख समझाए, वो मानता है, नहीं ना! ये तो हुई दुनिया की बात। अरे वहाँ तो कोई सुरक्षा भी नहीं है, हर समय हम असुरक्षित हैं, है कि नहीं!

वैसे ही परमात्मा से यदि आपका लगाव हो जाये, तो क्या दुनिया, क्या दुनियादारी! और ये पूरे जीवन, जब तक है, तब तक पीछा नहीं छोड़ने वाले! कभी कोई कहता है मेरी माँ बीमार, कोई कहता पिता, किसी के माँ-बाप नहीं तो उसकी फिक्र, कौन हमारे परिवार को पालेगा! तो यहाँ रहने की ज़रूरत नहीं। आप दुनिया में रहो ना! आप जब आध्यात्मिक जीवन अपनाते हो तो क्या यही सोचकर, यहाँ थोड़ा हमें सहारा मिल जायेगा! अरे भगवान तो हमें आत्मनिर्भर बनाना चाहता, और हम हैं कि सहारे छोड़ना ही नहीं चाहते!

इश्क यदि मजबूरी वाला है, तो कब तक चलेगा! परमात्मा हमें सच्चा आशिक बनाना चाहता, उसमें कोई शर्त नहीं, बस प्यार है, बिना शर्त, दिये जाने का भाव है। मजबूरी में किया गया कोई भी कार्य सुखदायी नहीं होगा। आप हमेशा उम्मीदों के सहारे रहेंगे।

अगर किसी एक के साथ आपका सम्बन्ध हो तो आप अपना सौ प्रतिशत (हन्ड्रेड परसेन्ट) दे सकते हैं, ऊर्जा के साथ। लेकिन पूरी दुनिया के साथ आप जुड़ेंगे तो आपकी ऊर्जा वैसे ही बँट जायेगी, न यहाँ के, न वहाँ के।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आप देखो ना, आध्यात्मिकता आपको दूसरों के शर्तों से निकालने के के लिए ही तो है, जिसमें आपके अंदर इतनी शक्ति भर जाती है कि आप हर समय कुछ लोग हों या ना हों, आप खुश, सुखी व शान्त रह सकते हैं। तभी वह बात जो आज तक आप सुनते आये, वो चरितार्थ होगी।

हाँ निश्चित रूप से जो भी हम और आप कार्य करते हैं, उसमें शर्त ज़रूरी है, लेकिन वह शर्त न्यूट्रल होगी, तब फायदा होगा। तब हम उसे फॉलो भी करेंगे। उसमें मजबूरी नहीं है, सोचने की जगह है, छूट है। यही तो भगवान हमसे करवाना चाहते हैं। उसने शर्त बतायी, वो भी न्यूट्रल तरीके से कि ये सारी समस्याएं इन विकारों की वजह से हैं, ये आप देखो, इन्हें छोड़ो, तभी होगा। फोर्स नहीं है, लेकिन करना तो होगा ना। नहीं तो ना माया मिलेगी ना ही राम...!

---


## उपलब्ध पुस्तकें

# मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

**प्रश्न:** मैं एक कुमार हूँ। मैं ये जानना चाहता हूँ कि मैं अपनी पवित्रता को श्रेष्ठ कैसे बनाऊँ ताकि स्वप्न तक भी कोई व्यवधान न रहे?

**उत्तर:** आत्माओं को पावन बनाने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है। वे आकर राजयोग सिखाते हैं जिससे हम सर्वशक्तिवान से शक्तियाँ लेकर इस माया पर विजयी बनते हैं। यदि कोई राजयोग का अभ्यास चार घण्टे प्रतिदिन न करे तो चाहे वो कोई भी हो, उसे काम सताएगा ही। यही कारण है कि सन्यासी भी पवित्रता का सुख नहीं ले पाते।

आप श्रेष्ठ पवित्र बनकर भगवान को मदद करना चाहते हैं, यह सर्वोत्तम पुण्य है। बिना साधना पवित्रता श्रेष्ठ नहीं हो पाएगी, इसलिए राजयोग की साधना के साथ सम्बन्धों में न्यारापन का अभ्यास करें। न्यारे न होने से एक दो के इतने प्यारे बन जाते हैं कि वासना हावी हो जाती है।

अमृतवेला योग का आनंद लें। स्वयं को स्मृति स्वरूप रखने के लिए एक अव्यक्त मुरली का प्रतिदिन अध्ययन करें। सारे दिन में कुछ भी खाते-पीते, दूध या भोजन को दृष्टि देकर सात बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर सेवन करें। एक संकल्प दृढ़ता पूर्वक कर लें कि मेरा जीवन दूसरों को व प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने के लिए है। तो कम से इससे छ: मास में ही आपकी पवित्रता आनंदकारी हो जायेगी।

**प्रश्न:** पास्ट की कई बातें बार-बार याद आती हैं, जो हमारे पुरुषार्थ में बाधक हैं। हम इनसे मुक्त होना चाहते हैं, कोई उपाय बतायें।

**उत्तर:** पास्ट में लौटने की शक्ति तो किसी में नहीं है, परंतु मनुष्य का मन बार-बार पास्ट में चला जाता है। इसका कारण है बातों को पकड़कर रखने का स्वभाव। यह आदत उनमें होती है जो सरलचित्त नहीं हैं। कुछ भी बात होने पर उसे पकड़कर बैठ जाता है, उसे छोड़ नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि वह अंतर्मन में समाई हुई बुरी बात या बुरी घटना सूक्ष्म रूप में निगेटिव तरंग ब्रेन को भेजती रहती हैं जोकि मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। जो मनुष्य उन बातों को भूल जाता है, उसका मस्तिष्क निगेटिव एनर्जी से मुक्त रहता है। इसीलिए भूलने में ही भला है।

याद रखें... भगवानुवाच... श्रेष्ठ स्मृति से पुरानी स्मृतियाँ विस्मृत हो जाएंगी। अत: पास्ट को भूलने के लिए बार-बार श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् स्वमान का अभ्यास करना चाहिए। हम किसी एक बात को परिवर्तन कर दें जो बहुतकाल से कमज़ोरी के रूप में रही है। बस दृढ़ संकल्प करें कि ये करना है व ये नहीं करना है। प्रतिदिन सवेरे मन को उमंग दिलाने वाले विचारों से व अपने महान लक्ष्य की स्मृति से भरें, इससे अलबेलापन समाप्त हो जाएगा।

**प्रश्न:** हम अपने घर को मंदिर कैसे बनायें?

**उत्तर:** पाँच बार घर में बापदादा का आह्वान- जिस घर में पाँच बार बाप आये तो वह घर महान तीर्थ बन जायेगा। भगवान के वायब्रेशन्स जिस घर में पाँच बार फैलने लगें, वह घर निर्विघ्न बन जायेगा। हमें यह निश्चय हो, विश्वास हो कि बाबा आ जाता है। देखें बाबा को आते हुए...देखने में आनंद लें। बाबा ने कहा है कि....भगवान के बच्चे बुलायें...और बाप ना आये, यह हो नहीं सकता। बाप इंतज़ार करते हैं कि कब मेरे बच्चे मुझे मदद के लिए यूज़ करें। जब तुम हज़ार भुजा वाले को छोड़ कर दो भुजा वाले के पास जाते हो, तो बाप सोचते हैं कि अब इनके लिए क्या करें...! अपने घर को यज्ञ बना लें- प्यारे बाबा ने कहा है कि...जो बच्चे अपने घर को बाबा का यज्ञ समझते हैं, वे जैसे कि बाबा के भंडारे से ही खाते हैं...उनके भंडार व भंडारी सदा भरपूर रहते हैं... उनकी ज़िम्मेवारी बाबा पर आ जाती है। अपने घर का मुखिया बाबा को बना लें- हम अपने घर का हेड, मुखिया बाबा को बना लें, तो सब समस्याएँ खत्म हो जाएंगी। पैसे चाहिए...कोई काम है... बाबा को बता दें, सब हो जायेगा। आत्मिक दृष्टि- दो बार घर के सभी सदस्यों को आत्मा देखें...संकल्प करें...ये महान आत्माएं हैं। ये देवकुल की रॉयल आत्माएं हैं। ये इष्ट देव-देवी बनने वाली आत्माएं हैं। घर में रिगार्ड, आदर सम्मान का माहौल बन जायेगा। वातावरण सरल बनाएं। संस्कार सरल होंगे तो वातावरण सरल होगा। हमारे संस्कार टाइट ना हों, वातावरण भारी ना हो...हल्कापन हो। जिन माँ-बाप की स्व-स्थिति अच्छी होगी, उनके बच्चे बिगड़ेंगे नहीं..और ऐसा कुछ है भी, तो सरल रहके परिस्थिति का सामना करें...हल्के रहें। बोल पर अटेंशन- हमारे बोल बहुत मीठे हों। हमारा हर बोल वरदानी हो, स्वमान से भरपूर हो। इष्टदेवी स्वमान का अभ्यास- मैं इष्ट देवी हूँ... इस स्वमान में रहें। इष्टदेवी के वायब्रेशन्स जैसे होंगे, वैसा ही घर का वातावरण होगा। सहयोग के लिए प्रशंसा करें। परिवार में एक दो के कार्यों की प्रशंसा करें, सहयोग करें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com


देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133